किष्किंध्या पत्र १६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कि० १

श्रीगणेशायनमः॥श्लोक॥कुंदेंदीवरसुंदरावतिबलौविज्ञानधामावुभौ॥शोभाढ्यौ
वरधन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रवृंदप्रियौ॥मायामानुषरूपिणौरघुवरौसद्धर्मवर्मौहि
तौ॥सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः॥१॥ब्रह्मांभोधिसमुद्भवंकलि
मलप्रध्वंसनं॥चाव्ययंश्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरेसंशोभितंसर्वदा॥संसारामयभेष
जंसुखकरंश्रीजानकीजीवनं॥धन्यास्तेकृतिनःपिबंतिसततंश्रीरामनामामृतं॥२॥
सोरठा॥मुक्तिजन्ममहिजानिज्ञानषानिअघहानिकर॥जहँवसशंभुभवानिसोका
सीसेइयकसन॥जरतसकलसुरवृंदविषमगरलजेहिपानकिय॥तेहिनभजसिमन
मंदकोकृपालसंकरसरिस॥१॥चौपाई॥आगेचलेवहुरिरघुराया॥रिष्यमूकपर्वत १
नियराया॥तहँरहसचिवसहितसुग्रीवा॥आवतदेषिअतुलवलसींवा॥अतिसभीतक

जब कथा बुझाई॥ प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना॥ सो सुख उमा जाइ नहि बरना॥ पुलकि
त तन मुख आव न बचना॥ देखत रुचिर बेष कै रचना॥ पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्ही॥ हर
ष हृदय निज नाथहि चीन्ही॥ मोर न्याउ मै पूछा साईं॥ तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं॥
तव माया बस फिरौं भुलाना॥ ता ते मै नहि प्रभु पहिचाना॥ दोहा॥ एक मैं मंद मोहबस
कुटिल हृदय अज्ञान॥ पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान॥ २॥ जदपि नाथ ब
हु अवगुन मोरे॥ सेवक प्रभुहि परै जनि भोरे॥ नाथ जीव तव माया मोहा॥ सो निस्तरै तुम्ह
रेहि छोहा॥ ता पर मै रघुबीर दोहाई॥ जानौ नहि कछु भजन उपाई॥ सेवक सुत पति मा
तु भरोसे॥ रहै असोच बनै प्रभु पोसे॥ अस कहि परेउ चरन अकुलाई॥ निज तन प्रगटि

प्रीति उर छाई॥ तब रघुपति उठाइ उर लावा॥ निज लोचन जल सींचि जुड़ावा॥ सुनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हसुनुहनुमाना॥ पुरुषजुगलबलरूपनिधाना॥ धरिवटुरूपदेषुतैंजाई॥ कहेसुजा
निजियसैनवुझाई॥ पठएवालिहोहिंमनमैला॥ भागौंतुरततजौंयहसैला॥ विप्ररूप
धरिकपितहँगयऊ॥ माथनाइपूछतअसभयऊ॥ कोतुम्हस्यामलगौरसरीरा॥ छत्री
रूपफिरहुवनवीरा॥ कठिनभूमिकोमलपदगामी॥ कवनहेतुविचरहुवनस्वामी॥ मृ
दुलमनोहरसुंदरगाता॥ सहतदुसहवनआतपवाता॥ कीतुम्हतीनिदेवमहँकोऊ॥ न
रनारायनकीतुमदोऊ॥ दोहा॥ जगकारनतारनभवभंजनधरनीभार॥ कीतुम्हअ
षिलभुवनपतिलीन्हमनुजअवतार॥ १॥ कोसलेसदसरथकेजाए॥ हमपितुवचनमा
निवनआये॥ नामरामलछिमनदोउभाई॥ संगनारिसुकुमारिसुहाई॥ इहाँहरीनिसि
चरवैदेही॥ विप्रफिरहिंहमषोजततेही॥ आपनचरितकहाहमगाई॥ कहहुविप्रनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

किं०
३

षी देइ करि जोरी प्रीति दिढाइ॥४॥ कीन्हि प्रीति कछु बीच न राषा॥ लछिमन राम चरित स
व भाषा॥ कह सुग्रीव नयन भरि वारी॥ मिलिहि नाथ मिथिलेस कुमारी॥ मंत्रिन्ह सहित
इहाँ एक वारा॥ वैठ रहेउँ मै करत विचारा॥ गगन पंथ देषी मै जाता॥ परवस परी वहुत वि
लपाता॥ राम राम हा राम पुकारी॥ हमहि देषि दीन्हे उपट डारी॥ मागा राम तुरत तेहि दी
न्हा॥ पट उर लाइ सोच अति कीन्हा॥ कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा॥ तजहु सोच मन आन
हु धीरा॥ सव प्रकार करिहौं सेवकाई॥ जेहि विधि मिलिहि जानकी आई॥ दोहा॥ सषा
वचन सुनि हरषे कृपासिंधु वलसींव॥ कारन कवन वसहु वन मोहि कहहु सुग्रीव॥५॥
नाथ वालि अरु मै दो भाई॥ प्रीति रही कछु वरनि न जाई॥ मयसुत मायावी तेहि ना ३
ऊँ॥ आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ॥ अर्द्ध राति पुर द्वार पुकारा॥ वाली रिपु वल सहै न पारा॥ धा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कपिजियमानतम्हिजनि ऊना॥ तैममप्रियलछि मनतैंदूना॥ समदरसीमोहिकहसव
कोऊ॥ सेवक्रप्रियअनन्यगतिसोऊ॥ दोहा॥ सोअनन्यजाकेअसिमतिनटरैहनुमं
त॥ मैसेवकसचराचररूपस्वामिभगवंत॥ ३॥ देषिपवनसुतपतिअनुकूला॥ हृदयहर
षवीतीसवसूला॥ नाथसैलपरकपिपतिरहई॥ सोसुग्रीवदासतवअहई॥ तेहिस
ननाथमयत्रीकीजै॥ दीनजानितेहिअभयकरीजै॥ सोसीताकरषोजकराइहि॥ जहँत
हँमरकटकोटिपठाइहि॥ एहिविधिसकलकथासमुझाई॥ लिए दुऔजनपीठिच
ढाई॥ जवसुग्रीवँरामकहुँदेषा॥ अतिसयजन्मधन्यकरिलेषा॥ सादरमिलेउनाइप
दमाथा॥ भेटेउअनुजसहितरघुनाथा॥ कपिकरमनविचारयहिरीती॥ करिहहिवि
धिमोसनयेप्रीती॥ दोहा॥ तवहनुमंतउभयदिसिकीसवकथासुनाइ॥ पावकसा

कि०
४

री॥ तिन्हहिविलोकतपातकभारी॥ निजदुखगिरिसमरजकरिजाना॥ मित्रकदुखरजमे
रुसमाना॥ जिनकेअसिमतिसहजनआई॥ तेसठकतहठिकरतमिताई॥ कुपथनिवारि
सुपंथचलावा॥ गुनप्रगटैअवगुननिदुरावा॥ देतलेतमनसंकनधरई॥ बलअनुमानसदा
हितकरई॥ बिपतिकालकरसतगुननेहा॥ श्रुतिकहसंतमित्रगुनयेहा॥ आगेकहम्रदुब
चनबनाई॥ पाछेअनहितमनकुटिलाई॥ जाकरचितअहिगतिसमभाई॥ असकुमित्र
परिहरेहिभलाई॥ सेवकसठनृपकृपनकुनारी॥ कपटीमित्रसूलसमचारी॥ सषासोच
त्यागहुबलमोरे॥ सबविधिघटबकाजमैतोरे॥ कहसुग्रीवंसुनहुरघुवीरा॥ बालिमहाबल
अतिरनधीरा॥ दुंदुभिअस्थितालदेषराए॥ विनुप्रयासरघुनाथउठाए॥ देषिअमित
बलबाढीप्रीती॥ बालिबधबइन्हभैपरतीती॥ बारबारनावइपदसीसा॥ प्रभुहिजानिमन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा वालि देषि सो भागा॥ मैं पुनि गयउँ वंधु संग लागा॥ गिरिवर गुहाँ पैठ सो जाई॥ तब वा
ली मोहि कहा वुझाई॥ परषेसु मोहि एक पषवारा॥ नहिं आवौं तव जानेसु मारा॥ मास
दिवस तहँ रहेउँ षरारी॥ निसरी रुधिर धार तहँ भारी॥ वालि हतेसि मोहि मारिहि आ
ई॥ सिला देइ तहँ चलेउँ पराई॥ मंत्रिन्ह पुर देषा विनु सांई॥ दीन्हेउ मोहि राजु वरि
आई॥ वाली ताहि मारि गृह आवा॥ देषि मोहि जिय भेद वढावा॥ रिपु सम मोहि मारेसि
अति भारी॥ हरि लीन्हेसि सर्वस अरु नारी॥ ताके भय रघुवीर कृपाला॥ सकल भुवन मैं
फिरेउँ विहाला॥ इहाँ साप वस आवत नाहीं॥ तदपि सभीत रहौं मन माहीं॥ सुनि सेवक
दुष दीनदयाला॥ फरकि उठी दोउ भुजा विसाला॥ दोहा॥ सुनु सुग्रीव मारिहौं वालि
हि एकहि वान॥ ब्रह्म रुद्र सरनागत गये न उवरहि प्रान॥ ६॥ जे न मित्र दुष होहिं दुषा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कि० ५

कोसलेससुतलछिमनरामा॥कालहुजीतिसकहिंसंग्रामा॥दोहा॥: कहबालीसुनुभी
रुप्रियसमदरसीरघुनाथ॥जौंकदाचिमोहिमारहिंतौपुनिहोउंसनाथ॥७॥असकहि
चलामहाअभिमानी॥तृनसमानसुग्रीवंहिजानी॥भिरेउभौबालीअतितर्जा॥मुठि
कामारिमहाधुनिगर्जा॥तवसुग्रीवंविकलहोइभागा॥मुष्टिप्रहारवज्रसमलागा॥मे
जोकहारघुवीरकृपाला॥बंधुनहोइमोरयहकाला॥येकरूपतुम्हभ्रातादोउ॥तेहि
भ्रमतेनहिमारेउंसोउ॥ करपरसासुग्रीवंसरीरा॥तनुभाकुलिसगईसवपीरा॥मे
लीकंठसुमनकैमाला॥पठवापुनिवलदेइविसाला॥पुनिनानाविधिभईलराई॥
विटपओटदेखहिंरघुराई॥दोहा॥: वहुछलवलसुग्रीवंकरहियहाराभयमानि ५
माराबालीरामतवहृदयमांझसरतानि॥८॥पराविकलमहिसरकेलागे॥पुनिउठि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नभयउअलोला॥सुषसंपतिपरिवारवडाई॥सवपरिहरिकरिहौंसेवकाई॥येसवराम
भगतिकेवाधक॥कहहिंसंततवपदअवराधक॥सत्रुमित्रसुषदुषजगमाहीं॥मायाकृ
तपरमारथनाहीं॥वालिपरमहितजासुप्रसादा॥मिलेहुरामतुम्हसमनविषादा॥सपने
जेहिसनहोइलराई॥जागेसमुझतमनसकुचाई॥अवप्रभुकृपाकरहुएहिभांती॥सवत
जिभजनकरौंदिनराती॥सुनिविरागसंजुतकपिवानी॥वोलेविहसिरामुधनुपानी॥जो
कछुकहेहुसत्यसवसोई॥सषावचनममम‍ृषानहोई॥नटमर्कटइवसवहिनचावत
रामुषगेसवेदअसगावत॥लैसुग्रीवसंगरघुनाथा॥चलेचापसायकगहिहाथा॥तव
रघुपतिसुग्रीवपठावा॥गर्जेसिजाइनिकटवलपावा॥सुनतवालिक्रोधातुरधावा॥गहि
करचरननारिसमुझावा॥सुनुपतिजिन्हहिमिलेउसुग्रीवा॥तेदोउवंधुतेजवलसींवा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पानिधाना॥ जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं॥ अंत राम कहि आवत नाहीं॥ जासु नाम बल
संकर कासी॥ देत सबहि सम गति अविनासी॥ मम लोचन गोचर सोई आवा॥ बहुरि कि प्र
भु अस बनहि बनावा॥ छंद॥ ॥ सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुंक पावहीं॥ मोहि जानि अति अभिमा
न बस प्रभु कहेउ राखु सरीरहीं॥ अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूर
हीं॥ अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊं॥ जेहि जोनि जन्मौं कर्म बस त
हं राम पद अनुरागऊं॥ यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिये॥ ग
हि बांह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिये॥ दोहा॥ राम चरन दृढ प्रीति करि बा ६
लि कीन्ह तनु त्याग॥ सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानै नाग॥१०॥ राम बालि निज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वैठे देषि प्रभु आगे॥ स्याम गात सिर जटा वनाये॥ अरुन नयन सर चाप चढाये॥ पुनि पु
नि चितै चरन चित दीन्हा॥ सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा॥ हृदय प्रीति मुष वचन क
ठोरा॥ वोला चितै राम की ओरा॥ धर्म हेतु अवतरेहु गोसांई॥ मारेहु मोहि व्याध की ना
ई॥ मैं वैरी सुग्रीव पिआरा॥ अवगुन कवन नाथ मोहि मारा॥ अनुज वधू भगिनी सुत
नारी॥ सुनु सठ कन्या सम ये चारी॥ इन्हहि कुदृष्टि विलोकै जोई॥ ताहि वधे कछु पाप
न होई॥ मूढ तोहि अतिसय अभिमाना॥ नारि सिषावन करसि न काना॥ मम भुज वल
आश्रित तेहि जानी॥ मारा चहसि अधम अभिमानी॥ दोहा॥ सुनहु राम स्वामी सन च
लन चातुरी मोरि॥ प्रभु अजहूं मै पापी अंतकाल गति तोरि॥ ४॥ सुनत राम अति कोमल
वानी॥ वालि सीस परसेउ निज पानी॥ अचल करौं तनु राषहु प्राना॥ वालि कहा सुनु कृ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क्लि॰ ७ ती॥ स्वारथलागिकरहिसवप्रीती॥ वालित्रासव्याकुलदिनराती॥ तनवहुव्रनचिंताजर
छाती॥ सोइसुग्रीवंकीन्हकपिराऊ॥ अतिकृपालरघुवीरसुभाऊ॥ जानतहूँअसप्रभु
परिहरहीं॥ काहेनविपतिजालनरपरहीं॥ पुनिसुग्रीवंहिलीनवोलाई॥ वहुप्रकार
नृपनीतिसिखाई॥ कहप्रभुसुनुसुग्रीवंहरीसा॥ पुरनजाउँदसचारिवरीसा॥ गतग्री
षमवरषारितुआई॥ रहिहौंनिकटसैलपरछाई॥ अंगदसहितकरहुतुम्हराज॥ सं
ततहृदयधरेहुममकाज॥ जवसुग्रीवंभवनफिरिआए॥ रामुप्रवर्षनगिरिपरछाए॥
दोहा॥ः प्रथमहिदेवन्हगिरिगुहाराषेउरुचिरवनाइ॥ रामकृपानिधिकछुदिनवा
सकरहिंगेआइ॥ १२॥ सुंदरवनकुसुमितअतिसोभा॥ गुंजतमधुपनिकरमधुलोभा॥ ७
कंदमूलफलपत्रसोहाए॥ भयेवहुतजवतेप्रभुआए॥ देषिमनोहरसैलअनूपा॥ रहे

धामपठावा॥नगरलोगसवव्याकुलधावा॥नानाविधिविलापकरतारा॥छूटेकेसन
देहसंभारा॥ताराविकलदेषिरघुराया॥दीन्हज्ञानहरिलीन्हीमाया॥छितिजलपा
वकगगनसमीरा॥पंचरचितअतिअधमसरीरा॥प्रगटसोतनुतवआगेसोवा॥जीव
नित्यकेहिलगितुम्हरोवा॥उपजाज्ञानचरनतवलागी॥लीन्हेसिपरमभगतिवरमा
गी॥उमादारुजोषितकीनाईं॥सवहिनचावतरामुगोसांईं॥तवसुग्रीवहिआयसुदी
न्हा॥मृतककर्मविधिवतसवकीन्हा॥रामुकहाअनुजहिसमुझाई॥राजुदेहुसुग्रीव
हिजाई॥रघुपतिचरननाइकरिमाथा॥चलेसकलप्रेरितरघुनाथा॥दोहा॥ लछिम
नतुरतवोलायेपुरजनविप्रसमाज॥राजदीन्हसुग्रीवकहँअंगदकहँजुवराज॥११॥
उमारामसमहितजगमाहीं॥गुरपितुमातुवंधुप्रभुनाहीं॥सुरनरमुनिसवकेयहरी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कि०	जनुजीवहिमायालपटानी॥समिटिसमिटिजलभरहिंतलावा॥जिमिसदगुनसज्जन
८ जल	पहिंआवा॥सरिताजलनिधिमहुँजाई॥होइअचलजिमिजिवहरिपाई॥दोहा॥हरि
तभूमितृनसंकुलसमुझिपरहिंनहिंपंथ॥जिमिपाषंडवादतेगुप्तहोहिंसदग्रंथ॥१४
दादुरधुनिचहुँदिसासोहाई॥वेदपढहिंजनुवटसमुदाई॥नवपल्लवभएविटपअने
का॥साधकमनजसमिलेंविवेका॥अर्कजवासपातविनुभयऊ॥जससुराजखलउ
द्यमगयऊ॥खोजतकतहुँमिलैनहिंधूरी॥करैक्रोधजिमिधर्महिदूरी॥ससिसंपन्न
सोहमहिकैसी॥उपकारीकैसंपतिजैसी॥निसितमघनषद्योतविराजा॥जनुदंभिन्ह
करमिलासमाजा॥महावृष्टिचलिफूटिकियारीं॥जिमिसुतंत्रभयेंविगरहिंनारी॥ ८
कृषीनिरावहिंचतुरकिसाना॥जिमिवुधतजहिंमोहमदमाना॥देषियतचक्रवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तहँ अनुज सहित सुर भूपा॥ मधुकर खग म्रग तनु धरि देवा॥ करहि सिद्ध मुनि प्रभु के
सेवा॥ मंगलरूप भयउ बन तब ते॥ कीन्ह निवास रमापति जब ते॥ फटिक सिला अति
सुभ्र सुहाई॥ सुख आसीन तहाँ दोउ भाई॥ कहत अनुज सन कथा अनेका॥ भगति
बिरति न्रपनीति बिबेका॥ बरषा काल मेघ नभ छाए॥ गर्जत लागत परम सोहाए॥
दोहा॥ लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पेखि॥ ग्रही बिरति रत हरष जस बिष्नु
भगत कहु देखि॥१३॥ घन घमंड नभ गर्जत घोरा॥ प्रिया हीन डरपत मन मोरा॥ दामिनि
दमक रह न घन माहीं॥ खल के प्रीति जथा थिर नाहीं॥ बरषहि जलद भूमि नियराए
जथा नवहि बुध बिद्या पाए॥ बुंद अघात सहहि गिरि कैसे॥ खल के बचन संत सह जैसे॥
छुद्र नदी भरि चली तोराई॥ जस थोरेहु धन खल इतराई॥ भूमि परत भा ढाबर पानी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

किं० ९

करनी॥जलसंकोचबिकलभइमीना॥अबुधकुटुंबीजिमिधनहीना॥बिनुघननिर्मल
सोहअकासा॥हरिजनइवपरिहरिसबआसा॥कहुंकहुंद्रष्टिसारदीथोरी॥कोउएक
पाववभगतिजिमिमोरी॥दोहा॥चलेहरषितजिनगरन्रपतापसबनिकभिषारि॥जि
मिहरिभगतिपाइश्रमतजहिंआश्रमीचारि॥१६॥सुषीमीनजेनीरअगाधा॥जिमिह
रिसरननएकौबाधा॥फूलेकमलसोहसरकैसा॥निर्गुनब्रह्मसगुनभयेजैसा॥गुं
जतमधुकरमुषरअनूपा॥सुंदरषगरवनानारूपा॥चक्रवाकमनदुषनिसिपेषी
जिमिदुर्जनपरसंपतिदेषी॥चातकरटततृषाअतिओही॥जिमिसुषलहइनसंकर
द्रोही॥सरदातपनिसिससिअपहरई॥संतदरसजिमिपातकटरई॥देषिइंदुचकों न ६
रसमुदाई॥चितवहिंजिमिहरिजनहरिपाई॥मसककदंसबीतेहिमत्रासा॥जिमिद्विज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क षग नाहीं॥ कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं॥ उषर वरषै त्रन नहिं जामा॥ जिमि ह
रिजन हिय उपज न कामा॥ विविध जंतु संकुल महि भ्राजा॥ प्रजा वाढ जिमि पाइ सु
राजा॥ जँह तँह रहे पथिक थकि नाना॥ जिमि इंद्रिय गन उपजे ग्याना॥ दोहा॥ कव
हु प्रवल वह मारुत जहँ तहँ मेघ विलाहिं॥ जिमि कपूत के उपजे कुल सद्धर्म नसा
हि॥ १५॥ वरषा विगत सरद रितु आई॥ लछिमन देषहु परम सुहाई॥ फूले कास सकल
महि छाई॥ जनु वरषा कृत प्रगट वुढाई॥ उदित अगस्ति पंथ जल सोषा॥ जिमि लोभ
हि सोषै संतोषा॥ सरिता सर निर्मल जल सोहा॥ संत हृदय जस गत मद मोहा॥ रस रस
सूष सरित सर पानी॥ ममता त्याग करहि जिमि ग्यानी॥ जानि सरद रितु षंजन आए॥
पाइ समै जिमि सुकृत सुहाए॥ पंक न रेनु सोह असि धरनी॥ नीति निपुन न्रप के जसि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कि० १० वा॥ चारिहुविधितेहिकहिसमुझावा॥ सुनिसुग्रीवँपरमभयमाना॥ विषयमोरहरिली
न्हेउग्याना॥ अवमारुतसुतदूतसमूहा॥ पठहुजहँतहँवानरजूहा॥ कहहुपाखमहुँआ व
वनजोई॥ मोरेकरताकरवधहोई॥ तवहनुमंतबोलायेदूता॥ सबकरकरिसनमानवहू
ता॥ भयअरुप्रीतिनीतिदेषराई॥ चलेसकलचरनन्हिसिरुनाई॥ येहिअवसरलछिम
नपुरआये॥ क्रोधदेषिजहँतहँकपिधाये॥ दोहा॥ धनुषचढाइकहातवजारिकरौंपुर
छार॥ ब्याकुलनगरदेषितवआयेउबालिकुमार॥ १९॥ चरननाइसिरविनतीकीन्ही॥
लछिमनअभयवाँहतेहिदीन्ही॥ क्रोधवंतलछिमनसुनिकाना॥ कहकपीसअति
भयअकुलाना॥ सुनुहनुमंतसंगलेतारा॥ करिविनतीसमुझाउकुमारा॥ तारासहितजा १०
इहनुमाना॥ चरनवंदिप्रभुसुजसुवषाना॥ करिविनतीमंदिरलेआये॥ चरनपषारि

दोहकियेकुलनासा॥ दोहा॥ भूमिजीवसंकुलरहे गयेसरदरितुपाइ॥ सदगुरमिलेजा
हिजिमिसंसयभ्रमसमुदाइ॥१७॥ वरषागतनिर्मलरितुआई॥ सुधिनतातसीताकेपाई
येकवारकैसेहुसुधिजानौं॥ कालहुजीतिनिमिषमहुआनौं॥ कतहुरहोजोजीवति
होई॥ तातजतनकरिआनौंसोई॥ सुग्रीवहुसुधिमोरिविसारी॥ पावाराजकोसपुरनारी
जेहिसायकमारामैंवाली॥ तेहिसरहतौंमूढकहकाली॥ जासुक्रपाछूटहिंमदमो
हा॥ ताकहुउमाकिसपनेहुकोहा॥ जानहियहचरित्रमुनिज्ञानी॥ जिनरघुवीरचरन
रतिमानी॥ लछिमनक्रोधवंतप्रभुजाना॥ धनुषचढाइगहेकरवाना॥ दोहा॥ तवअ
नुजहिसमुझावारघुपतिकरुनासींव॥ भयदेखाइलेआवहुतातसखासुग्रीव॥१८॥
इहांपवनसुतहृदयविचारा॥ रामकाजसुग्रीवविसारा॥ निकटजाइचरननिसिरुना

कि०
११

अब सोइ जतन करहु मन लाई॥ जेहि बिधि सीता के सुधि पाई॥ दोहा॥ः येहि बिधि हो
त बतकही आये बानर जूथ॥ नाना बरन सकल दिसि देखिय कीस बरूथ॥ २१॥ बानर के
टक उमा मै देखा॥ सो मूरख जो करन चह लेखा॥ आइ राम पद नावहि माथा॥ निरखि
बदन सब होहि सनाथा॥ अस कपि एक न सेना माहीं॥ राम कुसल जेहि पूछी नाहीं॥
यह कछु नहि प्रभु कइ अधिकाई॥ बिस्वरूप ब्यापक रघुराई॥ ठाढे जहँ तहँ आयसु पा
ई॥ कह सुग्रीव सबहि समुझाई॥ राम काज अरु मोर निहोरा॥ बानर जूथ जाहु चहु ओ
रा॥ जनकसुता कहु खोजहु जाई॥ मास दिवस महँ आयहु भाई॥ अवधि मेटि जो बिनु सु
धि पाये॥ आवइ बनिहि सो मोहि मराये॥ दोहा॥ः बचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले ११
तुरंत॥ तब सुग्रीवँ बोलाये अंगद नल हनुमंत॥ २२॥ सुनहु नील अंगद हनुमाना॥ जाम

पलंग वैठाये॥ तव कपीस चरनन्हि सिर नावा॥ गहि भुज लछिमन कंठ लगावा॥ नाथ
विषय सम मद कछु नाहीं॥ मुनि मन मोह करै छन माहीं॥ सुनत विनीत वचन सुष पावा॥
लछिमन तेहि वहु विधि समुझावा॥ पवन तनय सव कथा सुनाई॥ जेहि विधि गये दूत समु
दाई॥ दोहा॥ हरषि चले सुग्रीव तव अंगदादि कपि साथ॥ रामानुज आगे करि आये जहँ
रघुनाथ॥ २०॥ नाइ चरन सिर कह कर जोरी॥ नाथ मोहि कछु नाहिन षोरी॥ अतिसय प्र
वल देव तव माया॥ छूटै राम करहु जौं दाया॥ विषय वस्य सुर नर मुनि स्वामी॥ मैं पावर प
सु कपि अति कामी॥ नारि नयन सर जाहि न लागा॥ घोर क्रोध तम निसि जो जागा॥ लोभ
पास जेहि गर न वधाया॥ सो नर तुम्ह समान रघुराया॥ यह गुन साधन ते नहि होई॥ तु
म्हरी कृपा पाव कोइ कोई॥ तव रघुपति वोले मुसकाई॥ तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कि० न सरिता सर गिरि षोहा ॥ राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह ॥ २३ ॥ कतहु होइ नि
१२ सिचर सै भेटा ॥ प्रान लेहि येक येक चपेटा ॥ बहु प्रकार गिरि कानन हेरहि ॥ कोउ मुनि
मिलइ ताहि सब घेरहि ॥ लागि त्रषा अतिसय अकुलाने ॥ मिलै न जल घन गहन भुला
ने ॥ मन हनुमान कीन्ह अनुमाना ॥ मरन चहत सब बिनु जल पाना ॥ चढि गिरि सिषर
चहुं दिसि देषा ॥ भूमि बिवर एक कौतुक पेषा ॥ चक्रबाक बक हंस उडाही ॥ बहुतक षग
प्रबिसहि तेहि माही ॥ गिरि तें उतरि पवनसुत आवा ॥ सब कहुं लै सोइ बिवर देषावा ॥
आगे कै हनुमंतहि लीन्हा ॥ पैठे बिवर बिलंबु न कीन्हा ॥ दोहा ॥ दीष जाइ उपवन सर
वर बिकसित बहु कंज ॥ मंदिर येक रुचिर तहं बैठि नारि तपपुंज ॥ २४ ॥ दूरि तें ताहि सब
न्हि सिर नावा ॥ पूछे निज ब्रतांत सुनावा ॥ तेहि तब कहा करहु जलपाना ॥ षाहु सुरस १२

वंतमतिधीरसुजाना॥सकलसुभटमिलिदछिनजाहु॥सीतासुधिपूछेहुसबकाहू॥म
नक्रमबचनसोजतनबिचारेहु॥रामचंद्रकेकाजसवारेहु॥भानुपीठिसेइअउरआगी
स्वामिहिसर्बभावछलत्यागी॥तजिमायासेइअपरलोका॥मिटहिसकलभवसंभव
सोका॥देहधरेकरयेहफलुभाई॥भजियरामसबकामबिहाई॥सोइगुनग्यसोईबड
भागी॥जोरघुबीरचरनअनुरागी॥आयसुमागिचरनसिरुनाई॥चलेहरषिसुमिरतरघु
राई॥पाछेपवनतनयसिरुनावा॥जानिकाजप्रभुनिकटबोलावा॥परसासीससरोरु
हपानी॥करमुद्रिकादीन्हजनजानी॥बहुप्रकारसीतहिसमुझायेहु॥कहिबलबिरह
बेगितुम्हआयेहु॥हनुमतजन्मसुफलकरिमाना॥चलेउहृदयधरिकृपानिधाना॥
जद्यपिप्रभुजानतसबबाता॥राजनीतिराखतसुरत्राता॥दोहा॥ चलेसकलबनखोज

किं०
१३

पुनिअंगदकहसवपाहीं॥मरनभयउकछुसंसयनाहीं॥अंगदवचनसुनतकपिवीरा॥
वोलिनसकहिनयनवहनीरा॥छनयेकसोचमगनहोइगये॥पुनिअसवचनकहत
सवभये॥हमसीताकैसुधिलीन्हेंविना॥नहिंजैहैंजुवराजप्रवीना॥असकहिलवनसिंधु
तटजाई॥वैठेकपिसवदर्भडसाई॥जामवंतअंगददुखदेषी॥कहीकथाउपदेसविशेषी॥
न तातरामकहुंनरजनिमानहु॥निर्गुनब्रह्मअजितअजजानहु॥हमसवसेवकअतिव
डभागी॥संततसगुनब्रह्मअनुरागी॥दोहा॥ निजइछाप्रभुअवतरइसुरमहिगोद्वि
जलागि॥सगुनउपासकसंगतहँरहहिंमोक्षसवत्यागि॥२६॥एहिविधिकथाकहहिं
वहुभांती॥गिरिकंदरासुनीसंपाती॥वाहिरहोइदेषिवहुकीसा॥मोहिअहारदीन्हज १३
गदीसा॥आजुसवहिकहुंभछनकरऊं॥दिनवहुचलेअहारविनुमरऊं॥कवहुंने

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुंदर फल नाना॥ मज्जन कीन्ह मधुर फल षाये॥ तासु निकट पुनि सब चलि आये॥ ते
हिं सब आपनि कथा सुनाई॥ मैं अब जाव जहाँ रघुराई॥ मूंदहु नयन विवर तजि जाहू
पैहहु सीतहि जनि पछिताहू॥ नयन मूंदि पुनि देषहि वीरा॥ ठाढे सकल सिंधु के तीरा॥
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा॥ जाइ कमल पद नायसि माथा॥ नाना भाँति विनय तेहि की
न्ही॥ अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही॥ दोहा॥ वदरीवन कहुँ सो गई प्रभु आज्ञा धरि सी
स॥ उर धरि राम चरन जुग जे वंदत अज ईस॥ २५॥ इहाँ विचारहि कपि मन माहीं॥ वीती अ
वधि काज कछु नाहीं॥ सव मिलि कहहि परसपर वाता॥ विनु सुधि लये करव का भ्राता॥
कह अंगद लोचन भरि वारी॥ दुहुँ प्रकार भई मृत्यु हमारी॥ इहाँ न सुधि सीता कै पाई॥
उहाँ गये मारिहि कपिराई॥ पिता वधे पर मारत मोही॥ राषा राम निहोरत ओही॥ पुनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

किं० जरे पंख अति तेज अपारा॥ परेउ भूमि करि घोर चिकारा॥ मुनि एक नाम चंद्रमा ओही
२४ लागी दया देखि करि मोही॥ बहुप्रकार तेहि ज्ञान सुनावा॥ देह जनित अभिमान छु
डावा॥ त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिही॥ तासु नारि निसिचर पति हरिही॥ तासु खोज पठइ
हि प्रभु दूता॥ तिन्हहि मिले ते होब पुनीता॥ जमिहहि पंख करसि जनि चिंता॥ तिन्हहि
दिखाइ दिहेसु तैं सीता॥ मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजु॥ सुनि मम बचन करहु प्रभु
काज॥ गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका॥ तहँ रह रावन सहज असंका॥ तहँ असोक उपब
न जहँ रहई॥ सीता बैठि सोच रत अहई॥ दोहा॥ मैं देखउँ तुम्ह नाहीं गीधहि दिष्टि अ
पार॥ बूढ़ भएउँ न त करतेउँ कछुक सहाइ तुम्हार॥२८॥ जो नाघइ सत जोजन सागर २४
करै सो राम काज मति आगर॥ मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा॥ राम कृपा कस भएउ

मिलै भरि उदर अहारा ॥ आजु दीन्ह विधि एक हि वारा ॥ डरपे गीध वचन सुनि काना ॥ अ
व भा मरन सत्य हम जाना ॥ कपि सब उठे गीध कह देषी ॥ जामवंत मन सोच विशेषी ॥ क
ह अंगद विचारि मन माहीं ॥ धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥ राम काज कारन तनु त्यागी ॥ ह
रि पुर गए उ परम वड भागी ॥ सुनि षग हरष सोक जुत वानी ॥ आवा निकट कपिन्ह भय
मानी ॥ तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई ॥ कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥ सुनि संपा
ति वंधु कै करनी ॥ रघुपति महिमा वहु विधि वरनी ॥ दोहा ॥ मोहि लै जाहु सिंधु तट देउ
तिलांजलि ताहि ॥ वचन सहाइ करवि मइ पैहहु योजहु जाहि ॥ २७ ॥ अनुज क्रिया करि
सागर तीरा ॥ कहि निज कथा सुनहु कपि वीरा ॥ हम दोउ वंधु प्रथम तरुनाई ॥ गगन
गए रवि निकट उडाई ॥ तेज न सहि सक सो फिरि आवा ॥ मै अभिमानी रवि नियरावा ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कि०
१५
जोनहिंहोइताततुम्हपाहीं॥रामकाजलगितवअवतारा॥सुनतहिभयउपर्वता
कारा॥कनकवरनतनतेजविराजा॥मानहुअपरगिरिन्हकरराजा॥सिंहनादकरि
वारहिंवारा॥लीलहिंनाघउंजलनिधिषारा॥सहितसहाइरावनहिमारी॥आनौंइ
हांत्रिकूटउपारी॥जामवंतमैपूछउंतोही॥उचितसिषावनुदीजहुमोही॥येतनाक
रहुताततुम्हजाई॥सीतहिदेषिकहोसुधिआई॥तवनिजभुजवलराजिवनैना॥कौ
तुकलागिसंगकपिसेना॥छंद॥ कपिसेनसंगसंघारिनिसिचररामुसीतहिआ
निहैं॥त्रैलोकपावनसुजसुसुरमुनिनारदादिवषानिहैं॥जोसुनतगावतकहतस
मुझतेपरमपदनरपावई॥रघुवीरपदपाथोजमधुकरदासतुलसीगावई॥दोहा॥ १५
भवभेषजरघुनाथजसुसुनहिंजेनरअरुनारि॥तिन्हकरसकलमनोरथसिद्धक

सरीरा॥ पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं॥ अति अपार भवसागर तरहीं॥ तासु दूत तुम्ह त
जि कदराई॥ राम हृदय धरि करहु उपाई॥ अस कहि गरुड गीध जब गयऊ॥ तिन्ह
के मन अति बिसमय भयऊ॥ निज निज वल सब काहू भाषा॥ पार जाइ कै संसय राखा॥
जरठ भयउँ अब कहै रिछेसा॥ नहि तन रहा प्रथम वल लेसा॥ जबहि त्रिविक्रम भए
खरारी॥ तव मै तरुन रहेउँ वल भारी॥ दोहा॥ वलि बांधत प्रभु बाढेउ सो तनु बरनि
न जाइ॥ उभय घरी महँ दीन्ही सात प्रदक्षिन धाइ॥ १८॥ अंगद कहइ जाउँ मैं पारा॥
जियँ संसय कछु फिरती बारा॥ जामवंत कह तुम्ह सब लायक॥ पठइअ किमि सब ही क
र नायक॥ कहइ रीछपति सुनु हनुमाना॥ का चुप साधि रहेउ वलवाना॥ पवन तनय
वल पवन समाना॥ बुधि बिबेक बिज्ञान निधाना॥ कवन सो काज कठिन जग माहीं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कि°
९९

रहित्रिपुरारि॥सोरठा॥ः नीलोपलतनस्याम कामकोटिसोभाअधिक॥सुनियता
सुगुनग्रामजासुनामअघखगवधिक॥३०॥इतिश्रीरामचरितमानसेसकलक
लिकलुषविध्वंसनेविद्रुसंतोयसंपादनोनामचतुर्थसोपानः॥समाप्तशुभ
मस्तुसिद्धिरस्तु॥संवत॥१९८० माघशुक्ल द्वितीयसोपानः॥श्री॥लि°सजीवन
लाल १

९९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

किष्किंध्याकांडः समाप्तः १६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative